सफल राजस्थान

मजबूत इरादे, बढ़ते कदम

डाक पं. संख्या :
जयपुर सिटी/129/2018-20

सफल राजस्थान
न्यूज पेपर से जुड़ने के लिये संपर्क करें।
safalraj2012@gmail.com
web : www.safalrajasthan.com
contact
8829966661
9251166661
9214466661

वर्ष- 3 | अंक-32 | RNI. NO : RAJHIN/2016/69327 | सोमवार, जयपुर 25 मार्च, 2019 | साप्ताहिक | पृष्ठ-4 | मूल्य : 7 रुपए

भाजपा की पहली लिस्ट में राजस्थान के 16 उम्मीदवार

14 नाम रिपीट, संतोष अहलावत का टिकट कटा

सफल राजस्थान

जयपुर। भाजपा ने लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी। जिसमें राजस्थान से 16 नाम घोषित कर दिए गए हैं। इस लिस्ट में पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के बेटे दुष्यंत का नाम भी शामिल है। जिन्हें झालावाड़-बारां से टिकट दिया गया है। वहीं जयपुर ग्रामीण से एक बार फिर राज्यवर्धन सिंह राठौड़ पर दांव खेला गया है। इस लिस्ट में 16 में से 14 नाम रिपीट किए गए है। झुंझुनूं से संतोष अहलावत का टिकट कटा गया है। उनकी जगह नरेन्द्र खींचल को टिकट दिया गया है। वहीं, अजमेर में पूर्व केंद्रीय मंत्री रहे स्वर्गीय सांवरलाल जाट की सीट से भागीरथ चौधरी को टिकट दिया गया है। गौरतलब है कि अगस्त, 2017 में सांवरलाल जाट का देहांत हो गया था। उस वक्त वे अजमेर सीट से सांसद थे। जिसके बाद यहां उपचुनाव हुए। जिसमें कांग्रेस के रघु शर्मा ने जीत हासिल की थी।

राजस्थान में भाजपा के उम्मीदवार

सीट	उम्मीदवार
गंगानगर	निहालचंद चौहान
बीकानेर	अर्जुन राम मेघवाल
झुंझुनूं	नरेन्द्र खींचल
सीकर	सुमेधानंद सारस्वत
जयपुर ग्रामीण	राज्यवर्धन सिंह राठौड़
जयपुर	रामचरण बोहरा
टोंक-सवाई माधोपुर	सुखवीर सिंह
अजमेर	भागीरथ चौधरी
पाली	पीपी चौधरी
जोधपुर	गजेंद्र सिंह शेखावत
जालोर	देवजी मानसिंग्राम पटेल
उदयपुर	अर्जुनलाल मीणा
चित्तौड़गढ़	सी.पी. जोशी
भीलवाड़ा	सुभाष चंद्रा बाहेरी
कोटा	ओम बिड़ला
झालावाड़-बारां	दुष्यंत सिंह

भाजपा की पहली सूची में पहले चरण की इन सीटों पर रुके नाम

राजसमंद
बांसवाड़ा
बाड़मेर

दूसरे चरण में होने वाले चुनावों में इन सीटों पर रुके नाम

नागौर
दौसा
करौली-धौलपुर
भरतपुर
अलवर
चूरू

कांग्रेस सरकार ने दो माह में किये ऐतिहासिक जनहित कार्य

जबकि 5 वर्षों तक भाजपा सिर्फ भाषण और जुमले पढ़ती रही : खाचरियावास

सफल राजस्थान

जयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता, परिवहन और सैनिक कल्याण मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने कहा कि राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने दो माह में प्रदेश में जनहित के वो काम कर दिये, जो पांच वर्ष तक भाजपा की सरकार नहीं कर पाई। राजस्थान में भाजपा की वसुधंरा सरकार के मंत्री और नेता सिर्फ घमण्ड में चूर रहे, जनता से मिलने की फुर्सत मुख्यमंत्री और मुत्रीयों को नहीं थी। भाजपा सरकार ने पांच वर्ष तक अगर राजस्थान के किसी भी वर्ग की सुध नहीं ली।

भाजपा सरकार के पांच वर्ष भ्रष्टाचार, कुषासन और घमण्ड की भेंट चढ़ गये, जबकि राजस्थान में कांग्रेस सरकार ने आते ही किसानों के 18 हजार करोड़ के कर्जे माफकर दिये इससे 24 लाख किसान परिवारों को कर्जमाफी का फायदा मिला, युवाओं को 3000-3500 रूपये बेरोजगारी भत्ता चुनावी वादे के अनुसार देना षुरू कर दिया गया, 1.75 करोड़ लोगों को 1 रूपये में अनाज, वृद्ध, विकलांग और विधवा पेंशन बढ़ा दी गई, शहीदों की विधवाओं को मिलने वाले 4 हजार रूपये बढ़ाकर 10 हजार रूपये कर दिये गये, रिटायर्ड सैनिकों के सभी लाभ बढ़ा दिये गये, कांग्रेस की सरकार ने आते ही कर्मचारी, व्यापारी, मजदूर, किसान और विद्यार्थियों से जो वादे किये उन वादों के अनुसार जनघोषणा पत्र को सरकारी दस्तावेज बनाकर काम करना शुरू कर दिया। प्रदेश में भाजपा सरकार के समय कानून व्यवस्था चौपट हो गई थी, जनता की सुनने वाला कोई नहीं था, अब सभी जगह सरकार ने जनता को मालिक मानकर, उनके मन की सुनकर काम करने का फैसला किया है, इसके परिणाम नजर आने लगे हैं।

खाचरियावास ने कहा कि केन्द्र सरकार की कोई भी योजना राज्य में सफल नहीं हो पाई, क्योंकि भाजपा के सांसद और मंत्री, प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की चमचागिरी करने में ही समय बिताते रहे। जयपुर-दिगी हाईवे को एक्सप्रेस हाईवे बनाने की बात केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कही थी, लेकिन आज तक जयपुर-दिल्ली हाईवे की हालत इतनी खराब हो गई है कि इन पांच वर्षो में लोगों की सड़क दुर्घटनाओं में जो हजारों मौते हुई हैं उसके लिये भाजपा सरकार जिम्मेदार है। भाजपा के सांसद जिन आदर्श गांवों को गोद लेकर विकास करने की बात कर रहे थे, उनकी भी हालत खराब है। भाजपा मुददों से ध्यान हटाकर लोकसभा चुनाव में देश की जनता के साथ धोखा कर रही है, उससे भलीभांति प्रदेश का मतदाता वाकिफ है। आने वाले चुनावों में भाजपा को सबक सिखाकर प्रदेश का मतदाता केन्द्र सरकार के धोखे का मुंह तोड़ जबाव देगा।

कांग्रेस राजावास ईकाई होली स्नेह मिलन संपन्न

सफल राजस्थान

जयपुर। गुरुवार को सीकर रोड राजावास के निजि गार्डन मे ग्राम ईकाई काँग्रेस का होली स्नेह मिलन समारोह के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी सदस्य प्रशान्त शर्मा थे अध्यक्षता राजावास सरपंच प्रतिनिधि रामपाल बाँयला की विशिष्ट अतिथि डीसीसी सचिव मोहन चौहान, जिला उपाध्यक्ष सेवादल राजेन्द्र बाँयला, शर्मा ने कहाँ आने वाले लोकसभा चुनाव मे सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर काम करेंगे पार्टी जिसको भी प्रत्याशी बनाकर भेजेगी हम सभी कार्यकर्ता चुनाव जिताकर भेजेगे उपस्थित जन रामदेव बरवड, महेश लाखीवाल, विमल वर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

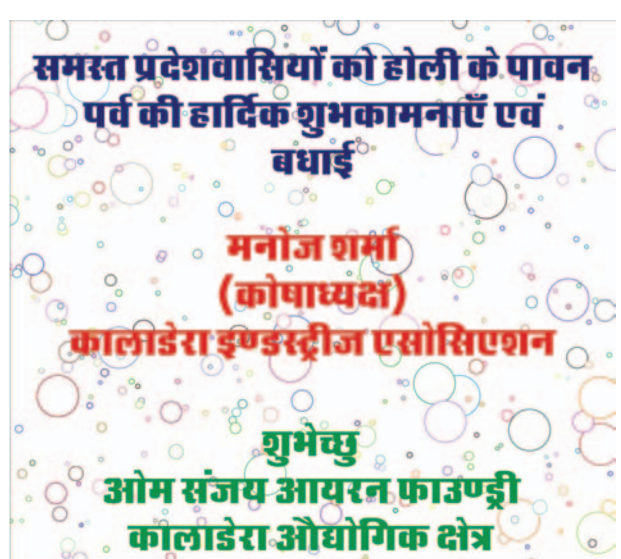

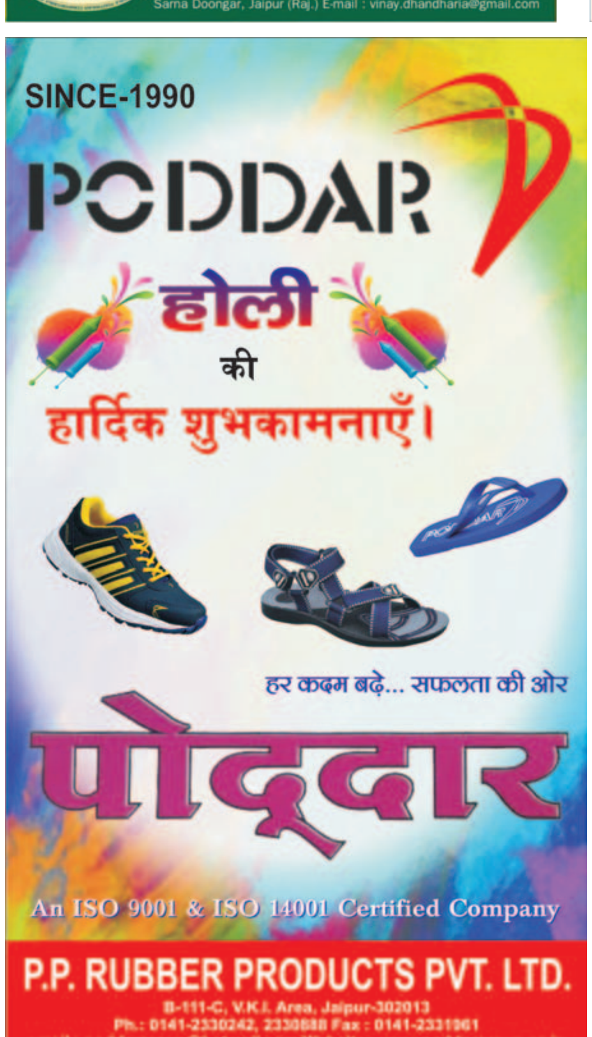

जयपुर में बाबा हरिशचन्द्र मार्ग स्थित नवल किशोर जी मंदिर में उन्नति सोशयल ग्रुप महिला मंच द्वारा आयोजित फागोत्स्व के दौरान नृत्य करती महिलाएं।

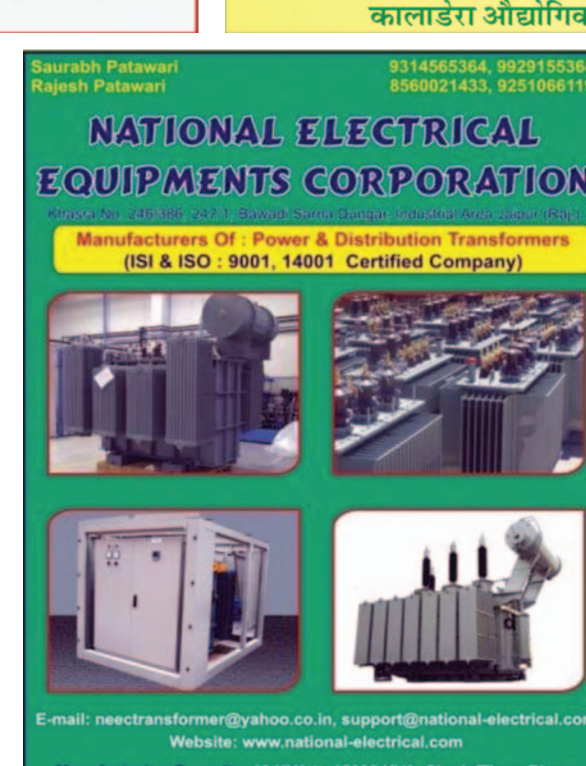

सम्पादकीय ... विमला देवी

होली में सियासत

सवाल है कि सत्ता की कुर्सी के लिए चुनाव के चक्कर में जुबानी तलवार भांजने के क्रम में अपने प्रतिद्वंद्वियों की गर्दन का खयाल न रखा जाए तो इसका दर्द समझा जा सकता है, लेकिन ऐसे बेलगाम बहादुरों को कम से कम अपने चेहरे का खयाल रखने से कौन मना

करता है! सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव की घोषणा दस दिन पहले हो जाने का एक असर यह हुआ कि होली के पहले ही हवा में राजनीति की उथल-पुथल घुलने लगी और नेताओं की जुबान से फूटे बोल पर फागुन का नशा सिर चढ़ कर बोलने लगा। दरअसल, चुनावी मौसम की औपचारिक दस्तक के पहले से ही देश के राजनीतिक माहौल में जिस तरह की गरमाहट की आहट सुनाई पड़ने लगती है, वह हर गुजरते दिन के साथ धमक और फिर धमकियों तक में तब्दील होती जाती है। इस क्रम में नेताओं के मुंह से अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए जैसी बातें निकलने लगती हैं, उससे कई बार यह लगने लगता है कि मामला किसी सीट पर चुनाव का है या दुश्मन देश पर जुबानी मिसाइलों से हमलों का! बोली और भाषा की ऐसी कड़वाहट से पैदा गरमी का तापमान कई बार नेताओं की जुबान से कुछ ऐसे बोल भी बरसा जाता है, जिसके छींटे कई बार उलटा असर करते हैं और ऐसा बोलने वाले नेता रूमाल की छांव से अपना चेहरा ढकने की नाकाम कोशिश करते दिखते हैं। सवाल है कि सत्ता की कुर्सी के लिए चुनाव के चक्कर में जुबानी तलवार भांजने के क्रम में अपने प्रतिद्वंद्वियों की गर्दन का खयाल न रखा जाए तो इसका दर्द समझा जा सकता है, लेकिन ऐसे बेलगाम बहादुरों को कम से कम अपने चेहरे का खयाल रखने से कौन मना करता है! यह छिपा नहीं है कि आजकल ऐसे चुनावी हकीम दिहाड़ी पर भी मिल जाते हैं, जो एक साथ अपने दुश्मनों पर हमला करने और उन्हें बचाने के भी नुस्खे बांचते और बेचते हैं! देखा जाए तो ऐसे चुनावी हकीम होली के मूल संदेश को अपने साथ रख कर बाजार में बैठते हैं कि जुबानी जंग करा सकते हैं तो आपस में जोड़ भी सकते हैं। मगर हमारे देश की राजनीतिक संस्कृति में अभी इस बात की फिक्र कम दिखाई देती है कि एक लोकतांत्रिक ढांचे में सत्ता के लिए होने वाले द्वंद्व को इस शक्ल में बनाए रखा जाए कि कल को एक-दूसरे के साथ अगल-बगल बैठने से पहले झेंपने की नौबत न आए। दरअसल, मुश्किल तब खड़ी होती है जब मुद्दों की बुनियाद आम अवाम की जिंदगी के हालात को बेहतर बनाने के बजाय अपने प्रतिद्वंद्वी की छवि को ध्वस्त करने वाले जुमलों पर टिकी होती है। इस भाव को सहारा मानने की मजबूरी में पड़े परस्पर विरोधी खेमों के नेता जनता की तकलीफों और समस्याओं की जगह निजी हमलों को हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में कई बार जुबान की लगाम छूट जाती है और अगले ही रोज इस तरह के बयान से खुद को बचाना पड़ता है कि 'अगर मेरी बातों से किसी की भावना आहत हुई है तो मैं खेद जताता हूं!' दरअसल, होली और सियासत के असर का एक बड़ा फर्क यह है कि होली में एक-दूसरे पर उड़ेले गए रंग या तंज जहां आपसी रिश्ते में विनोद से उपजा प्यार घोलते हैं, वहीं हमारी आज की राजनीतिक दुनिया में कई बार नेताओं के बोल से उनके विपक्षी भीतर तक चोटिल हो जाते हैं और इसका सीधा असर उनके सामान्य व्यवहार और संबंधों पर पड़ता है। सवाल है कि अनजान लोगों से लेकर टूटे रिश्तों तक के मेलजोल के त्योहार होली को अपनी खूबसूरत जायदाद मानने वाले हमारे देश के नेता क्या होली के सौहार्द की बुनियाद को एक जरूरी सबक नहीं मान सकते? क्या वे अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए ऐसा बर्ताव और ऐसी भाषा का सहारा नहीं ले सकते जो उनके राजनीतिक मकसद को तो पूरा करे। साथ ही आम अवाम के दिल के तार को एक-दूसरे से जोड़े और आपसी सौहार्द के रंग निखरते रहें?

देखा जाए तो ऐसे चुनावी हकीम होली के मूल संदेश को अपने साथ रख कर बाजार में बैठते हैं कि जुबानी जंग करा सकते हैं तो आपस में जोड़ भी सकते हैं। मगर हमारे देश की राजनीतिक संस्कृति में अभी इस बात की फिक्र कम दिखाई देती है कि एक लोकतांत्रिक ढांचे में सत्ता के लिए होने वाले द्वंद्व को इस शक्ल में बनाए रखा जाए कि कल को एक-दूसरे के साथ अगल-बगल बैठने से पहले झेंपने की नौबत न आए। दरअसल, मुश्किल तब खड़ी होती है जब मुद्दों की बुनियाद आम अवाम की जिंदगी के हालात को बेहतर बनाने के बजाय अपने प्रतिद्वंद्वी की छवि को ध्वस्त करने वाले जुमलों पर टिकी होती है।

पाठकों के पत्र

यदि आप आसपास के परिवेश से प्रभावित होकर कुछ लिखने का साहस रखते हैं, **इस पते पर लिखें।**

सफल राजस्थान

जी-48, सिने स्टार (सिटी स्टार), सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर -302039

ईमेल-

E-Mail : safalraj2012@gmail.com

मो. : 8829966661

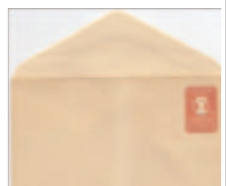

अड़तालीस साल बाद देश को मिला लोकपाल, सामने खड़ी हैं ये चुनौतियां

सच्चाई यह है कि ऐसी ही स्थिति में लोकपाल की अधिक जरूरत है, जिससे लोकसेवक भय का अनुभव करते रहें। हमारे देश में 1963 में पहली बार लोकपाल की अवधारणा सामने आई थी। भारत में भ्रष्टाचार ने सरकारी विभागों से लेकर सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सभी संस्थाओं को अपनी चपेट में ले लिया है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मानवीय मूल्यों से जुड़ी संस्थाएं भी इससे अछूती नहीं हैं। नौकरशाही को तो छोड़िए, देश व लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद की संवैधानिक गरिमा बनाए रखने वाले सांसद भी सवाल पूछने और चिट्ठी लिखने के एवज में रिश्वत लेने से नहीं हिचकिचाते। न्यायाधीशों को भी कदाचार के कठघरे में लाया गया है। जाहिर है, भ्रष्टाचार लोकसेवकों के जीवन का एक तथ्य मात्र नहीं, बल्कि शिष्टाचार के मिथक में बदल गया है।

भ्रष्टाचार की व्यापकता और उसकी स्वीकार्यता जिस अनुपात में समाज में व्याप्त हो चुकी है, उसका निर्मूलन इस अकेले कानून से संभव नहीं है। इसके बावजूद अब लोकपाल अस्तित्व में आ गया है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि निरंकुश जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई संभव होगी। अड़तालीस साल बाद देश को लोकपाल मिला है। लोकपाल के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली चयन समिति ने सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश पिनाकी चंद्र घोष का नाम तय किया था। राष्ट्रपति ने मंगलवार को इसे विधिवत मंजूरी दे दी। अब भारत में लोकपाल नाम की संस्था अस्तित्व में आ गई है। साढ़े पांच साल पहले लोकपाल कानून बन जाने के बावजूद लोकपाल की नियुक्ति नहीं हो पा रही थी। लोकपाल की नियुक्ति की जो प्रक्रिया है, उसमें विपक्ष के नेता को भी एक सदस्य के रूप में शामिल किए जाने का प्रावधान है। 2014 के आम चुनाव के बाद लोकसभा का जो गणित बना था, उसमें किसी भी दल की विपक्ष के नेता का दर्जा पाने की हैसियत नहीं रही। हालांकि कांग्रेस चवालीस सदस्यों के साथ लोकसभा में सबसे बड़ा विपक्षी दल है, पर सदन में उसी पार्टी का नेता प्रतिपक्ष बनता है, जिसके लोकसभा के कुल सदस्यों की संख्या कम से कम दस फीसद हो। लिहाजा, कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को लोकसभा अध्यक्ष ने प्रतिपक्ष का नेता मानने की कांग्रेस की अपील खारिज कर दी थी। हालांकि न्यायालय ने 2017 में दिए एक फैसले में स्पष्ट कर दिया था कि संसद में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी का नेता ही, नेता प्रतिपक्ष कहलाएगा। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर लोकसभा में कांग्रेस सबसे बड़ा विपक्षी दल था, इसलिए उसके नेता खड़गे को केंद्र सरकार ने समिति का विशेष आमंत्रित सदस्य बना दिया। किंतु खड़गे ने यह सदस्यता स्वीकार नहीं की, नतीजतन वे समिति की बैठक में हाजिर नहीं हुए। बहरहाल, लोकपाल आंदोलन के जनक अण्णा हजारे के आंदोलन ने अंततः देश को पहला लोकपाल दे दिया। गांधीजी ने कहा था, 'सच्चा स्वराज थोड़े से लोगों द्वारा सत्ता हासिल कर लेने से नहीं, बल्कि जब सत्ता का दुरुपयोग हो, तब सब लोगों द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता जगा कर ही प्राप्त किया जा सकता है।' इस नजरिए से राजकाज में बदलाव लाने का यह सक्रिय हस्तक्षेप और इसकी प्रासंगिकता दोहराई जाती रहनी चाहिए, जिससे इस प्रक्रिया के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र ने जो उपलब्धि हासिल की है, उसकी निरंतरता बनी रहे। भ्रष्टाचार की व्यापकता और उसकी स्वीकार्यता जिस अनुपात में समाज में व्याप्त हो चुकी है, उसका निर्मूलन इस अकेले कानून से संभव नहीं है।

इसके बावजूद अब लोकपाल अस्तित्व में आ गया है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि निरंकुश जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई संभव होगी। लोकपाल से संबद्ध जो पूरक विधेयक लंबित हैं, उनके प्रारूप को भी वैधानिक दर्जा मिलना जरूरी है। तभी लोकपाल जैसे सशक्त प्रहरी की वास्तविक सार्थकता सामने आएगी। लोकसेवकों की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के समावेश भी तभी परिलक्षित होंगे। अगर विपक्ष या सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा जन हस्तक्षेप कालांतर में जारी नहीं रहता है तो लोकपाल जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने वाला नहीं है। केंद्र सरकार की लोकपाल के बाबत शिथिलता के चलते यह अनुभव हुआ है कि संसद में किसी एक दल को असाधारण बहुमत मिलना भी लोकहित में लाभदायी नहीं है। जबकि सच्चाई यह है कि ऐसी ही स्थिति में लोकपाल की अधिक जरूरत है, जिससे लोकसेवक भय का अनुभव करते रहें। हमारे देश में 1963 में पहली बार लोकपाल की अवधारणा सामने आई थी। भारत में भ्रष्टाचार ने सरकारी विभागों से लेकर सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सभी संस्थाओं को अपनी चपेट में ले लिया है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मानवीय मूल्यों से जुड़ी संस्थाएं भी इससे अछूती नहीं हैं। नौकरशाही को तो छोड़िए, देश व लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद की संवैधानिक गरिमा बनाए रखने वाले सांसद भी सवाल पूछने और चिट्ठी लिखने के एवज में रिश्वत लेने से नहीं हिचकिचाते। न्यायाधीशों को भी कदाचार के कठघरे में लाया गया है। जाहिर है, भ्रष्टाचार लोकसेवकों के जीवन का एक तथ्य मात्र नहीं, बल्कि शिष्टाचार के मिथक में बदल गया है। जनतंत्र में भ्रष्टाचार की मिथकीय प्रतिष्ठा उसकी हकीकत में उपस्थिति से कहीं ज्यादा घातक इसलिए है कि मिथ हमारे लोक-व्यवहार में आदर्श स्थिति के नायक-प्रतिनायक बन जाते हैं। राजनीतिक व प्रशासनिक संस्कृति का ऐसा क्षरण राष्ट्र को पतन की ओर ही ले जाएगा। इसीलिए साफ दिखाई दे रहा है कि सत्ता पक्ष की गड़बड़ियों पर सवाल उठाना, संसदीय विपक्ष के बूते से बाहर होता जा रहा है। विडंबना यह है कि जनहित से जुड़े सरोकारों के मुद्दों को सामने लाने का काम न्यायपालिका को करना पड़ रहा है। राजनीतिक संस्कृति के इस क्षरण और पतन को रोकने का पहला दायित्व तो उस विधायिका का था, जो रामलीला मैदान में अण्णा आंदोलन के चरम उत्कर्ष पर पहुंचने के दौरान, संसद की सर्वोच्चता और गरिमा का स्वांग तो रच रही थी, लेकिन जनता को दोषमुक्त शासन-प्रणाली देने की दृष्टि से एक कदम भी कानूनी प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ा रही थी। इसमें कोई दोराय नहीं कि संविधान के अनुसार संसद हमारे राष्ट्र की सर्वोच्च विधायी शक्ति व संस्था है। लोकतांत्रिक राजनीतिक संरचना में उसी का महत्त्व सर्वोपरि है। लेकिन जिस तरह से वह व्यापक व समावेशी भूमिका निर्वहन में गौण होती चली जा रही है, उस परिप्रेक्ष्य में उसकी कार्य संस्कृति का प्रदूषित होते जाना तो था ही, जन सरोकारों से आंखें मूंद लेना भी था। संसद की गरिमा को नष्ट करने का काम विधायिका में स्थापित होती जा रही व्यक्ति केंद्रित राजनीतिक शैली ने भी किया है। राजनेताओं की उम्मीदवारी का निर्धारण आर्थिक व जातीय हैसियत से किए जाने के कारण भी, इस जनतांत्रिक व्यवस्था का क्षय हुआ है। राजनीति में अर्थ की महत्ता ने नैतिक सरोकारों को हाशिये पर खदेड़ दिया। संविधान निर्माताओं ने समता व न्याय पर आधारित और मानवीय गरिमा से प्रेरित भारतीय संप्रभुता के जो आदर्श स्थापित किए थे, उसकी अवहेलना इसी विधायिका ने की। संविधान-सम्मत कोई भी व्यवस्था कितनी भी श्रेष्ठ क्यों न हो, उसकी स्वीकार्यता तभी संभव होती है जब देश की जनता का बहुमत उसके साथ हो। डॉ भीमराव आंबेडकर ने 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा की बैठक में कहा था, 'संविधान का कार्य पूर्णतः संविधान की प्रकृति पर निर्भर नहीं करता। संविधान सिर्फ विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका को शक्ति देता है। राज्य के इन स्तंभों की क्रियात्मकता जिन कारकों पर अवलंबित है, वे हैं जनता-जनार्दन और राजनीतिक दल। उनकी आकांक्षाएं और राजनीति ही मुख्य निर्धारक आधार बिंदु हैं। जनता और दलों के भावी व्यवहार के बारे में कौन सटीक आकलन कर सकता है?' डॉ. आंबेडकर की यह आशंका सही साबित हुई। कालांतर में हमारे राजनीतिकों के व्यक्तित्व से सैद्धांतिक व्यवहार और आमजन के प्रति विश्वास दुर्लभ तत्त्व होते चले गए। राजनीति परिणाममूलक रहे, इसके लिए जरूरी है कि राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था लोक की निगरानी में रहें।

भारत की विमानन कम्पनियां जा रही हैं गर्त में

जेट एअरवेज का यह संकट विजय माल्या की कंपनी किंगफिशर की याद दिलाता है। किंगफिशर भी ऐसे ही संकट में फंसी थी और उसका क्या हश्र हुआ, किसी से छिपा नहीं है। किंगफिशर के बंद होने पर हजारों लोग बेरोजगार हो गए थे, कर्मचारियों को वेतन व अन्य बकाया का भुगतान तक नहीं हुआ और कंपनी पर बैंकों का नौ हजार करोड़ से ज्यादा कर्ज चढ़ गया। आज विजय माल्या पकड़ से बाहर है और बैंकों का पैसा मिल भी पाएगा या नहीं, कोई नहीं जानता। अब जेट एअरवेज भी इसी रास्ते पर है। इस कंपनी पर भी आठ हजार करोड़ से ज्यादा का कर्ज है, कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल रहा, कंपनी बैंकों का कर्ज और लीज पर विमान देने वाली कंपनियों का पैसा नहीं चुका पा रही है।

कंपनी ने जिन विमानों को लीज पर लिया था, उनका किराया चुकाने तक के पैसे नहीं हैं। एक हजार से ज्यादा पायलटों और इंजीनियरों को कई महीने से वेतन नहीं मिल रहा है। इसलिए अब पायलटों ने एक अप्रैल से काम बंद करने की धमकी दे डाली है। भारत का विमानन क्षेत्र ऐसे वक्त में संकटों का सामना कर रहा है जब हवाई यात्रा करने वालों की संख्या में वृद्धि का दावा किया जा रहा है, कई शहरों के बीच उड़ान शुरू करने की तैयारी है और नए हवाई अड्डे बनाने की दिशा में काम चल रहा है। ऐसे में विमानन कंपनियों से हर कोई यह उम्मीद करता है कि वे और बेहतर सेवा प्रदान करें। लेकिन हकीकत में ऐसा हो नहीं रहा। ऊंचाइयां छूने के बजाय भारत की विमानन कंपनियां गर्त में जा रही हैं। कई विमानन कंपनियों की माली हालत बता रही है कि आने वाले दिन इनके लिए संकटपूर्ण हैं और हवाई यात्रा करने वालों के लिए निराशाजनक। ताजा उदाहरण निजी क्षेत्र की कंपनी जेट एअरवेज का है। यह कंपनी गहरे आर्थिक संकट में फंस चुकी है और इसके आधे से ज्यादा विमान खड़े हो गए हैं। एक सौ उन्नीस में से सिर्फ इकतालीस विमान उड़ान पर हैं। कंपनी ने जिन विमानों को लीज पर लिया था, उनका किराया चुकाने तक के पैसे नहीं हैं। एक हजार से ज्यादा पायलटों और इंजीनियरों को कई महीने से वेतन नहीं मिल रहा है। इसलिए अब पायलटों ने एक अप्रैल से काम बंद करने की धमकी दे डाली है। हालात इतने विकट हैं कि जेट एअरवेज और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) के हाथ-पैर फूले पड़े हैं। समस्या का समाधान किसी को नजर नहीं आ रहा। जेट एअरवेज का यह संकट विजय माल्या की कंपनी किंगफिशर की याद दिलाता है। किंगफिशर भी ऐसे ही संकट में फंसी थी और उसका क्या हश्र हुआ, किसी से छिपा नहीं है। किंगफिशर के बंद होने पर हजारों लोग बेरोजगार हो गए थे, कर्मचारियों को वेतन व अन्य बकाया का भुगतान तक नहीं हुआ और कंपनी पर बैंकों का नौ हजार करोड़ से ज्यादा कर्ज चढ़ गया। आज विजय माल्या पकड़ से बाहर है और बैंकों का पैसा मिल भी पाएगा या नहीं, कोई नहीं जानता। अब जेट एअरवेज भी इसी रास्ते पर है। इस कंपनी पर भी आठ हजार करोड़ से ज्यादा का कर्ज है, कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल रहा, कंपनी बैंकों का कर्ज और लीज पर विमान देने वाली कंपनियों का पैसा नहीं चुका पा रही है। जेट में चौबीस फीसद हिस्सेदारी अबू धाबी की एतिहाद एअरलाइंस की है, लेकिन जेट एअरवेज की मदद के प्रस्ताव पर एतिहाद पीछे हट गई है। ऐसे में सरकार के दबाव में बैंकों का समूह जेट में अपनी हिस्सेदारी खरीद कर मदद देता भी है तो यह बैंकों के लिए बड़ा जोखिम होगा। सवाल है कि जर्जर हो चुकी जेट को ऐसे बेलआउट से कितने दिन और ऑक्सीजन दी जा सकेगी! जेट एअरवेज के मौजूदा संकट से विमान यात्री मुश्किल में हैं। आए दिन उड़ानें रद्द हो रही हैं। कंपनी न तो कोई वैकल्पिक सेवा मुहैया करवा रही है, न लोगों के पैसे लौटा रही है। इसमें बड़ी संख्या उन लोगों की भी है जिन्होंने कंपनी के विशेष पैकेज के तहत कई महीने पहले बुकिंग करा ली थी। लेकिन अब इन लोगों का पैसा नहीं लौटाया जा रहा। जेट के विमानों की सुरक्षा का मुद्दा भी चिंताजनक है। कहा जा रहा है कि ज्यादातर विमान सुरक्षा संबंधी मानकों को पूरा नहीं कर रहे। जेट और किंगफिशर के हालात बताते हैं कि भारत के विमानन क्षेत्र को भी वही रोग लग गया है। जिसके शिकार देश के ज्यादातर सार्वजनिक उपक्रम हो चुके हैं।

अपना-अपना देख लीजिए

तौर मुल्क हम बहुत बड़े फाड़ू हैं या अगंभीर हैं, उन मुद्दों पर चचा-विमर्श नहीं करते, जिन पर संवाद वक्त की जरूरत है। विश्व के सबसे प्रदूषित दस शहरों में सात भारत के हैं। इन पर कहीं कोई चिंता नहीं है। हैप्पी होली कहकर हम आगे निकल लेते हैं। हैप्पी करना सिर्फ होली के बूते की बात नहीं है। होली उल्लास का पर्व है, ऐसा हमें बताया जाता है। बताने भर से उल्लास आ जाए, तो क्या कहने। चुनाव भी सिर पर हैं, झऊआ भर-भर के शुभकामनाएं नेता दे रहे हैं। होली की शुभकामनाएं और चुनावी शुभकामनाएं अगर ठोस कूड़े में बदली जा सकतीं, तो हर नागरिक को अपने घर से कूड़ा उठवाने के लिए कई-कई ट्रकों की दरकार होती। चलिये अच्छा सोचते हैं। अगर इन शुभकामनाओं से बिजली बनाना संभव होता, तो भारत विश्व का सबसे बड़ा बिजली निर्यातक मुल्क बन जाता।विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में तो दो दिल्ली के अगल बगल हैं-गाजियाबाद और गुरुग्राम। नोएडा विश्व का छठा सबसे प्रदूषित शहर है। नोएडा में भारत के महत्त्वपूर्ण टीवी चैनलों के मुख्यालय हैं। चौबीस घंटे टीवी चैनलों से पाकिस्तान पर मिसाइलें बरस रही हैं। नार्थ कोरिया के तानाशाह किम जोंग के एटम बम गिर रहे हैं। जाने क्या-क्या गिर रहा है, बस ये चिंताएं नहीं दिखतीं कि हाय हम किस कदर प्रदूषित माहौल में जी रहे हैं? दुनिया भर का गंदा माहौल हमारे शहरों का हो रहा है। राजनीतिक दलों के एजेंडे पर दूर-दूर तक प्रदूषण की चिंता नहीं है। दिल्ली में हर साल अक्टूबर के आसपास सांस लेना दूभर हो जाता है मारे प्रदूषण के। पर कोई बात नहीं है,सब चलता है। कोई रिपोर्ट बताती है कि दिल्ली में सांस लेकर लाइफ दो से तीन साल कम हो सकती है, तो इसका जवाब यह हो जाता है कि साठ नहीं जीये, 57 जी लिये, तो क्या हो गया? तीन साल एक्सट्रा जीकर क्या तीर मार लेंगे? भारतीय जनता उल्लसित होने के तैयार बैठी होती है।

हैलो.. हैलो..

हॉस्पिटल	
गवर्मेंट सैटेलाइट हॉस्पिटल, बनीपार्क	2202449
महिला चिकित्सालय, सांगानेरी गेट	2610616
एसएमएस हॉस्पिटल	2560291
जनाना हॉस्पिटल	2378721
ईएसआई डिस्पेंसरी, मालवीयनगर	2522724
ईएसआई डिस्पेंसरी, प्रताप नगर	2792594
पुलिस	
कंट्रोल रूम, जयपुर सिटी	2575715
कंट्रोल रूम, जयपुर ग्रामीण	2575774
कंट्रोल रूम, यातायात	2565630
होटल-ट्यूरिज्म	
गणगौर	0141-2371641, 2371642, 2371644, 2371646
स्वागत	0141-2200595, 2206701, 09950996242
तीज	0141-2205482, 2205473, 2203199, 09829058458
होटल खासा कोठी	0141-2375151, 4063000, 09414073182
रोडवेज	
कंट्रोल रूम हैड ऑफिस	0141-2373044
सेंट्रल बस स्टैंड सिंधी कैंप	0141-2207906, 2207912, 207913, 2207914
डीलक्स बस आरक्षण	0141-2205790
ड्यूटी ऑफिसर प्लेटफार्म	0141-2207907
ड्यूटी ऑफिसर सिंधी कैंप	0141.2207903
रेलवे	
रेलवे पूछताछ	131
रेलवे पूछताछ	139
हैल्प लाइन	
चाइल्ड हैल्प लाइन	0141-2353997-1098
बिजली हैल्प लाइन	0141-2354900-1912
ऑपरेशन गरिमा	0141-2204475
एनीमल हॉस्पिटल हैल्प लाइन	0141-2373237
हैल्प इन सफरिंग हैल्प लाइन	0141-2760012
ब्लड बैंक	
संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हॉस्पिटल	0141- 2566251, 2574189
सवाई मानसिंह हॉस्पिटल	0141-256 02912
स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक	0141-2545293, 2721771
अग्निशमन केन्द्र	
अग्निशमन हैल्पलाइन	101
बनीपार्क	0141-2201898
बाईस गोदाम	0141-2211258
घाट गेट	0141-2615550
विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र	0141-2332573
एम आई रोड	0141-2375925
सांस्कृतिक केन्द्र	
जवाहर कला केंद्र	0141-2706560
रविन्द्र मंच	0141-2619061
ट्यूरिस्ट प्लेस	
अल्बर्ट हॉल म्यूजियम	0141-2570099
आमेर फोर्ट	0141-2530293
बिरला प्लेनेटोरियम	0141-2385094,
हवा महल	0141-618862
जंतर मंतर	0141-2610494
जयगढ़ फोर्ट	0141-2274848
नाहरगढ़ फोर्ट	0141-5148044
जयपुर जू	0141-2680494
राम निवास गार्डन	0141-2617319
साइंस पार्क	0141-2304654
सिटी पैलेस	0141-2608055
एम्बुलेंस	
एम्बुलेंस हैल्पलाइन	108
जेके लोन एम्बुलेंस	0141-2619827
महिला चिकित्सालय एम्बुलेंस	0141-2601333
एसएमएस एम्बुलेंस	0141-2560291
रेड क्रास एम्बुलेंस	0141-2617214
एयरलाइंस	
एयर अरेबिया	0141-5115455
इंडिगो एयरलाइंस	0141-5119992
एयर इंडिया सिटी	0141-2744840, 2743500
ओमान एयरवेज	0141-4002041
एयर अरेबिया	0141-2378501, 2378204
एयर इंडिया	0141-2721333, 2721519
गो एयर	0141-6500803
जेट एयरवेज	0141-5112222
स्पाइस जेट	0141-5119882
दुर्घटना थाना	
ईस्ट	2587436
वेस्ट	2577717
नॉर्थ	2568721
साउथ	2575171

चूड़ियों का फैशन हमेशा अपना रूप बदल लेता है। परंपरागत आभूषणों में चूड़ी महिला वर्ग को हमेशा लुभाती हैं। फिर चाहे ऑफिस गोइंग वुमेन हो या कॉलेज गर्ल, चूड़ी सभी की पसंद में शामिल है। आज भी बाजार में रंग-बिरंगी और फैशनेबल चूड़ियों का बोलबाला है।

चूड़ियों ने बदला रूप

फैशन के साथ-साथ चूड़ियों को भी नये रंग-रूप एवं आकर्षित ढंग से पेश किया जाता रहा है। कांच की चूड़ियों की खूबसूरती बढ़ाने के लिए उन पर दबके और किरकिरी का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। दबके के सिल्वर, गोल्ड और कॉपर कलर को चूड़ियों पर ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि दबके के इन रंगों से चूड़ियों की चमक बढ़ जाती है। इसके अलावा कांच की चूड़ियों पर फाइबर के रंगीन टुकड़ों तथा रंगीन नगों का भी प्रयोग इन्हें और भी अधिक आकर्षक बनाता है।

सर्वाधिक मांग

आजकल सबसे ज्यादा चलन स्टोनवर्क वाली कांच की चूड़ियों और लाख की चूड़ियों का है। इन चूड़ियों को डायमंड शेप और स्क्वायर शेप वाले स्टोन से सजाया गया है। साथ ही झुमके वाली चूड़ियां भी फैशन पर राज कर रही हैं। इन चूड़ियों में रंगीन मोती के वर्क वाले झुमके को इस तरह जोड़ा गया है कि चूड़ियों की खूबसूरती देखते ही बनती है। इसके अलावा नवविवाहिता को चूड़ा भी लुभा रहा है। चूड़ा हाथी दांत और प्लास्टिक में उपलब्ध है। सुहाग की निशानी बना चूड़ा भी अब लाल रंग के अलावा हर रंग में दिखने लगा है। कॉलेज गोइंग गर्ल को ब्लैक मैटेल की चूड़ियां और मोटे कंगन भा रहे हैं। चूड़ियों के ब्रेसलेट में मैटल, कांच और प्लास्टिक की सर्वाधिक मांग इसमें मोती और नग लड़कियों की पहली पसंद बने हुए हैं।

महिलाएं कैसे निकालें अपने लिए समय

नौकरीपेशा महिलाओं के पास समय के अभाव के कारण वे अपने लिए कुछ समय भी नहीं दे पातीं, यह बात उन्हें खटकती रहती है।

आज अधिकांश महिलाएं कामकाजी हैं। अपने पैरों पर खड़ा होना और कामकाजी होना बहुत अच्छी बात है, लेकिन कामकाजी होने पर महिलाओं की जिम्मेदारियां और ज्यादा बढ़ जाती हैं। इस चक्कर में उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बच पाता है और ये बात उन्हें खटकती रहती है कि सबकुछ करने के बावजूद अपने मन का काम करने के लिए उनके पास एक-दो घंटे समय भी नहीं बचता है।

नहीं होता है समय

एक प्राइवेट कंपनी में काम करने वाली लता सिंह कहती हैं कि ऑफिस और घर के कामकाज में इतनी उलझ जाती हूं कि पेपर पढ़ना, जिम जाना जैसे कामों के लिए एक-दो घंटे समय भी नहीं बच पाता है। ये कहानी सिर्फ लता सिंह की नहीं है, अधिकांश कामकाजी महिलाओं की यही समस्या है कि ऑफिस और घर के चक्कर में उनके पास थोड़ा समय भी नहीं बचता है, लेकिन अगर कामकाजी महिलाएं कुछ बातों पर ध्यान दें तो उनके पास अपने लिए कुछ समय आसानी से बच सकता है-

- सुबह क्या करना है, इसके बारे में रात में ही प्लानिंग बना लेने से आपके पास एक-दो घंटे का समय बच सकता है, जिसमें आप अपनी मर्जी का काम कर सकती हैं।
- रात में ही सोच लें कि सुबह क्या बनाना है। बच्चों को नाश्ते और लंच में क्या चाहिए, उनसे पूछ लें। सुबह-सुबह बच्चों के नखरे करने पर उसे मनाने में बहुत समय बर्बाद हो जाता है। अगर आपको पहले से पता होगा कि उन्हें कल क्या चाहिए तो आप आसानी से उनके लिए वो सामान बना देंगे। इससे न तो बच्चा नखरे करेगा और न ही उन्हें मनाने में समय बर्बाद होगा।
- रात में ही देख लें कि बच्चों के लंच बॉक्स साफ हैं या नहीं, रात में ही उसे साफ करके रख लें।
- बच्चों के कपड़े, जूते साफ हैं या नहीं, रात में ही देख लें, अगर जूतों पर पॉलिश की जरूरत है तो आप रात में ही कर लें। अगर बच्चे थोड़े बड़े हो गए हैं तो उन्हें समझाएं और खुद काम करने की आदत डालें।
- पति से पूछ लें कि वह सुबह क्या खाना पसन्द करेंगे और क्या लंच ले जाएंगे, क्योंकि अक्सर सुबह-सुबह इसके बारे में पता चलने पर फालतू में बहुत समय बर्बाद होता है।
- पति को अपने कपड़े खुद तैयार करने के लिए बोलें या फिर पति से पूछकर उनके लिए सुबह के कपड़े निकाल कर रख दें।
- अगर घर में सास-ससुर या कोई बुजुर्ग हैं तो उनके दवा और अन्य कामकाज को पहले से ही करके रखें ।
- अपने लिए डिसाइड कर लें कि सुबह क्या पहन कर ऑफिस जाना है। अक्सर सुबह हम ड्रेस डिसाइड करने में अपना घंटों बर्बाद कर देते हैं। अगर आप पहले से अपनी ड्रेस डिसाइड कर लेंगी तो उसमें लगने वाला समय भी बचेगा।

ताने न मारें पार्टनर को

कहीं आप भी उन लोगों में तो नहीं हैं, जो जानबूझ कर अपने पार्टनर को जलाते रहते हैं? दरअसल, इस भावना से आपका प्यार आपके करीब नहीं आता। इसलिए रिलेशनशिप में ऐसी मिसअंडरस्टैंडिंग से बचें।

अक्सर रिलेशनशिप में दिक्कत एक ही चीज की वजह से आती है, वह है जलन। लेकिन कई बार प्रॉब्लम यह नहीं होती कि आप या आपका पार्टनर जेलसी फील कर रहा है। प्रॉब्लम तब होती है, जब आप जानबूझ कर अपने पार्टनर को जलाने की कोशिश करते हैं।

यूथ में पेशेंस की कमी

इस बारे में सायकोलॉजिस्ट का कहना है कि आजकल के यूथ में पेशेंस नहीं है और वे कोई भी कदम उठाने से पहले सोचते नहीं हैं। अगर उन्हें अपने पार्टनर की कोई आदत पसंद नहीं है, तो वह उसे सॉल्व करने के बजाय वही चीज उनके साथ करते हैं, ताकि उनको सबक मिले। एक तरह से यह कहा जाए तो इसके पीछे बदले की भावना रहती है।

बदले की भावना

सायकोलॉजिस्ट कहते हैं, मेरे कई क्लाइंट्स ऐसे हैं, जिनमें अपने रिलेशनशिप को लेकर असुरक्षा की भावना है। ऐसे में उनके पास एक ही सॉल्यूशन होता है, जानबूझकर कुछ ऐसे काम करना कि उसका पार्टनर भी वही फील करे, जो उन्होंने किया। यह एक तरह से अपने पार्टनर को तंग करना है।

इसमें गलत क्या है?

इंजीनियरिंग की स्टूडेंट मानसी कहती हैं, जब मुझे ऐसा लगता है कि मेरा बॉयफ्रेंड मुझ पर ध्यान नहीं दे रहा है, तो मैं दूसरे लड़के से फ्लर्ट करने लगती हूं। कई बार मैं यह केवल इसलिए करती हूं कि उसे यह महसूस हो सके कि मुझे तब कैसा लगता है, जब वह दूसरी लड़कियों के साथ फ्लर्ट कर रहा होता है। और इसमें गलत भी क्या है?

प्यार बनाता है क्रेजी

हां, यह सच है कि प्यार किसी को भी क्रेजी बना देता है। जब एक पार्टनर हर्ट फील करता है या फिर किसी वजह से अपसेट हो जाता है, तब और भी ज्यादा क्रेजी हो जाता है, लेकिन सिचुएशन चाहे कैसी भी हो, अपने पार्टनर को बदले में जलाना गलत ही है।

रिलेशनशिप एक्सपर्ट रोहिणी राने के मुताबिक, अगर आप इनसिक्योर फील कर रही हैं और सोच रही हैं कि आपका पार्टनर भी आपकी तरह फील करे, तो यह बड़ी प्रॉब्लम है, क्योंकि ऐसे समय में आपको उसके साथ ज्यादा मैच्योर बिहेव करना चाहिए। आपका काम उसे दु:खी करना नहीं है और न ही उसकी प्रॉब्लम को बढ़ाना है।

रिलेशनशिप बरकरार

हालांकि जलन किसी रिलेशनशिप को खत्म नहीं करती, लेकिन कई ऐसे लोग ऐसे भी होते हैं, जो जानबूझकर अपने पार्टनर को चिढ़ाने की कोशिश करते हैं। कई लोगों का मानना है कि पार्टनर के साथ इस तरह का बिहेवियर पूरी तरह गलत है। लेकिन कुछ मानते हैं कि कुछ स्थितियां ऐसी होती हैं, जब अपने पार्टनर से इस तरह का बिहेवियर करना पड़ता है।

बहुत गलत है

अगर आप बस मजे लेने के लिए ऐसा कुछ कर रही हैं, तो भी यह बहुत गलत है, क्योंकि जब आपका पार्टनर इस वजह से आपसे दूर हो जाएगा, तब आप भला खुश कैसे रह पाएंगी! कहीं उसे जलाने के चक्कर में आप उसे खो ही न दें, इसलिए रिलेशनशिप में इन मसलों को सीरियसली लें।

रोमांटिक गाने से रीझती हैं महिलाएं

सभी छात्राओं को एक कमरे में बैठाया गया। और उन्हें रोमांटिक, पॉप, जैज, गजल और भक्ति गीत सुनाए गए। इसके बाद उन्हें गाने बजाने वाले पुरुषों से मिलवाया गया। जो शक्ल, सूरत और कद-काठी के औसत थे। इन लोगों को कुछ देर एक-दूसरे से बातें करने और उन्हें समझने का मौका भी दिया गया। फिर उन्हें अलग करते हुए महिलाओं से पुरुषों पर टिप्पणी मांगी गई।

रोमांटिक गाना सुनने वाली 52 फीसदी महिलाएं अपने पार्टनर के साथ डेटिंग करने को तैयार थीं। क्या आप अपने सपनों की राजकुमारी से इजहार-ए-मोहब्बत की तैयारी कर रहे हैं। यदि हां, तो उसे फूल, चॉकलेट या कोई गिफ्ट देने के बजाय रोमांटिक गाना सुनाएं। एक नए अध्ययन के मुताबिक कानों को सुकून पहुंचाने वाला रूमानी गीत सुनने के बाद महिलाओं द्वारा किसी पुरुष के प्रेम प्रस्ताव स्वीकारने की संभावना दोगुना ज्यादा होती है। वह शख्स देखने-सुनने में सामान्य ही क्यों न हो। फ्रांस स्थित हेरिवट वाट यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन के दौरान 183 महिलाओं को अलग-अलग श्रेणी के गाने सुनाने के बाद पुरुषों के प्रति बनी उनकी राय का विश्लेषण किया। सभी छात्राओं को एक कमरे में बैठाया गया। और उन्हें रोमांटिक, पॉप, जैज, गजल और भक्ति गीत सुनाए गए। इसके बाद उन्हें गाने बजाने वाले पुरुषों से मिलवाया गया। जो शक्ल, सूरत और कद-काठी के औसत थे। इन लोगों को कुछ देर एक-दूसरे से बातें करने और उन्हें समझने का मौका भी दिया गया। फिर उन्हें अलग करते हुए महिलाओं से पुरुषों पर टिप्पणी मांगी गई। रोमांटिक गाना सुनने वाली 52 फीसदी महिलाएं अपने पार्टनर के साथ डेटिंग करने को तैयार थीं। उन्हें बस सामने वाले इंसान के दिल से मतलब था।

होली स्नेह मिलन समारोह एवं मासिक बैठक सम्पन्न

सफल राजस्थान

अजमेर। सर्वेश्वर मित्र मण्डल अजमेर का होली स्नेह मिलन समारोह एवं मासिक बैठक का आयोजन गौतम सी.सै. स्कूल, हाथीभाटा अजमेर में हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संस्था के अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल व महासचिव शैलेन्द्र अग्रवाल ने उपस्थित सभी सदस्यों को होली की शुभकामनाए दी तथा चन्दन का तिलक लगाकर व पुष्प वर्षा कर तथा गुलाबजल व इत्र से होली खेली गयी। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारियों व सदस्यों ने फाग गीत, भजन, हास्य व्यंग्य, चुटकले आदि प्रस्तुत कर माहौल को खुशनुमा बना दिया।

कार्यक्रम के दौरान केजे ज्ञानी ने 'चरणो में आये हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन', ज्ञान चन्द गुप्ता ने 'मन्दरिया में बैठयो कान्हा काई करे रे, आ कान्हा होली खेला म्हारो जियो हरके, चॉंदी की कटोरी ला केसर भरके और रंग अबीर गुलाल ला जियो हरके', भवंरलाल गोयल ने ''फागुण आयो रंग बिरंगो आ गई होली.....', जयदेव सांखला ने 'रंग मत डाले रे सांवरिया म्हारो गुर्जर मारे रे.....' तथा शैलेन्द्र अग्रवाल आदि ने होली फाग तथा भजन प्रस्तुत कर उपस्थित सदस्यों को झुमने पर मजबूर कर दिया। फाग गीत व भजनों के बीच में सदस्यों ने पुष्प की पत्तियों से होली खेलकर माहौल को रंगमय बना दिया। इस अवसर पर लज्जा शंकर गोयल, उमेश चन्द गुप्ता, डा. कृष्ण गोपाल गोयल, अमृत कुमार सिंघल, अशोक शर्मा, आर.एस. अग्रवाल, जगदीश चन्द ऐरन आदि सदस्यों ने हास्य व्यगं चुटकटे आदि प्रस्तुत किये।

इससे पूर्व मण्डल के इस माह जिन सदस्यों का जन्मदिन आता है उनमें अशोक कुमार शर्मा, दिनेश चन्द तायल, जगदीश प्रसाद वर्मा का माल्यापर्ण कर व शुभकामना कार्ड देकर अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में मण्डल के संरक्षक लज्जा शंकर गोयल व कैलाश चन्द अग्रवाल, अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष अशोक गोयल, महासचिव शैलेन्द्र अग्रवाल, कोषाध्यक्ष दिनेश प्रणामी, मासिक बैठक के संयोजक सुरेश चन्द अग्रवाल, सचिव के.जे. ज्ञानी व मुरारीलाल सिंह वर्मा, कार्यकारिणी सदस्य चन्द्रनारायण अग्रवाल, सूर्य कुमार मित्तल, ऑडिटर डॉ. के.जी. गोयल, प्रवीण अग्रवाल, श्रीगोपाल अत्तार, चॉंदकरण अग्रवाल, सत्यनारायण सिंघल, अनिल कुमार अग्रवाल, ओमप्रकाश वर्मा, कालूराम अग्रवाल, कृष्ण कुमार गोस्वामी, अमृत कुमार सिंघल, अनिल कुमार गोयल, बालकिशन जोशी, अशोक टांक, श्याम बाबू मोदी, सत्यनारायण बंसल, अशोक कुमार शर्मा, भवंरलाल गोयल, दिनेश चन्द तायल, ज्ञानचन्द गुप्ता, कैलाश चन्द गोयल, आर.एस. अग्रवाल, रामगोपाल टकसाली, राजेन्द्र कुमार शिवहरे, राजकुमार सतवानी, सुनील कुमार सक्सेना, सत्यनारायण अग्रवाल, मानमल गोयल व सुरज नारायण अग्रवाल सहित संस्था के कई सदस्य उपस्थित थे।

सैनी के जन्मदिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर में उमड़ा जनसैलाब

सफल राजस्थान

जयपुर। एन.आर.पैराडाइज़ बैनाड़ रोड़ सीतावाली फाटक ,विधाधर नगर विधानसभा में गुलाब चन्द सैनी जिला अध्यक्ष किसान कांग्रेस जयपुर शहर के जन्मदिन के उपलक्ष में स्वेछिक रक्तदान शिविर मे उमड़ा जन सैलाब। महिलाओं व पुरुषो ने रक्तदान शिविर मे लिया बड़ चड कर भाग। जिसमे 451युनिट रक्तदान हुआ व रक्तदाताओं को सड़क सुरक्षा के लिए प्रेरित करते हुए हेलमेट वितरण किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एआईसीसी प्रवक्ता व जयपुर देहात कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व किसान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष संदीप सिंह चौधरी, विधाधर नगर विधानसभा कांग्रेस प्रत्याशी सीताराम अग्रवाल, राजस्थान विश्वविद्यालय अध्यक्ष विनोद जाकड़, नगर निगम चेयरमैन मन्जू शर्मा (पार्षद वार्ड 7) किशन अजमेरा (पार्षद वार्ड नं 2),सुशील शर्मा (पार्षद वार्ड नं 4)व पूर्व पार्षद सी.एम. शर्मा, देवेन्द्र बुटाटी वार्ड 14, और पूर्व प्रधान बंशीधर सैनी जी आदि गणमान्य लोगो की उपस्थित मे रक्तदान शिविर सम्पन्न हुआ।

होली मिलन समारोह

कांग्रेस प्रत्याशी सीताराम अग्रवाल के कांग्रेस कार्यालय रोल नंबर 3 पर सभी कार्यकर्ताओं ने होली खेली व सभी कार्यकर्ताओं को सीताराम अग्रवाल ने बधाइयां व शुभकामनाएं।

जोधपुर से टिकट पाने की दौड़ में गहलोत के बेटे सबसे आगे

सफल राजस्थान

जोधपुर। जोधपुर लोकसभा सीट एक अलग तरह की चुनावी लड़ाई के लिए तैयार हो रही है, जिसे लेकर राजस्थान की सत्तारूढ़ कांग्रेस और मुख्य विपक्षी भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) दोनों फूंक-फूंक कर कदम रख रही हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने संकेत दिए हैं कि उनके बेटे वैभव गहलोत इस सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। वैभव के जोधपुर से चुनाव लड़ने की अटकलों के बीच यह सीट राज्य में सबसे ज्यादा चर्चा में रहने वाला संसदीय क्षेत्र बन गया है। कांग्रेस ने यहां से आठ बार चुनाव जीता है, जबकि भाजपा ने चार बार चुनाव जीता है। यह सीट मौजूदा सांसद गजेंद्र सिंह शेखावत के पास है, जोकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार में राज्य मंत्री हैं। शेखावत ने कहा, अगर वैभव इस चुनाव में लड़ेंगे, तो यह सीट देश में सबसे ज्यादा चर्चा वाली सीट बन जाएगी। शेखावत ने कहा, हमने राजनीतिक दिशा बदल दी है। कांग्रेस ने मंदिर, गाय और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर भाजपा का अनुसरण करना शुरू कर दिया है। कांग्रेस नेताओं ने भी (भारत माता की जय) कहना शुरू कर दिया है। इस बीच, गहलोत और उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच सोच में अंतर को देखते हुए कांग्रेस में सबकुछ सही नहीं लग रहा है। पायलट चुनाव के लिए मौजूदा मंत्रियों के रिश्तेदारों को टिकट देने के स्थान पर पार्टी कार्यकर्ताओं को नामित करने की प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं। पायलट ने स्पष्ट कर दिया है कि वह लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए अपने परिवार से किसी को भी आगे नहीं बढ़ाएंगे और वह इसके स्थान पर पार्टी कार्यकर्ताओं को मौका देना चाहेंगे।

चुनाव ड्यूटी के दौरान शराब पीकर आने व लापरवाही बरतने पर कार्मिक निलंबित

सफल राजस्थान

उदयपुर। लोकसभा आमचुनाव 2019 के तहत सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में स्थापित मीडिया प्रकोष्ठ में कार्यरत कार्मिक द्वारा शराब पीकर ड्यूटी पर आने एवं अन्य कार्मिकों व पत्रकारों के साथ दुर्व्यवहार करने की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी (कलक्टर) आनंदी ने एक आदेश जारी कर दोषी कार्मिक लक्ष्मण सिंह चैहान को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

घोषणा : किसानों को चुनाव बाद मिलेगी सम्मान निधि

सफल राजस्थान

जयपुर। मध्यप्रदेश और राजस्थान सहित सात राज्यों के किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि की पहली किस्त के लिए लोकसभा चुनाव खत्म होने तक इंतजार करना पड़ सकता है। इन राज्यों में 2.5 करोड़ से अधिक किसान हैं। कृषि मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि संबंधित राज्य न तो पैसा ट्रांसफर करने का अनुरोध भेज रहे हैं और न ही डेटा वेरीफाई कर रहे हैं। इस कारण केंद्र सरकार भुगतान नहीं कर पा रही। चुनाव आचार संहिता लागू होने के कारण मंत्रालय राज्यों पर दबाव नहीं बना सकता है। इन राज्यों में मध्यप्रदेश और राजस्थान के अलावा पश्चिम बंगाल, दिल्ली, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और केंद्र शासित प्रदेश

लक्षद्वीप शामिल हैं। मंत्रालय के अनुसार देशभर के 13 करोड़ किसानों में से अभी पौने 5 करोड़ का डेटा अपलोड हुआ है और 2.75 करोड़ किसानों को ही पहली किस्त मिल पाई है।

गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती...

सफल राजस्थान

जयपुर। धुलंडी से ही सुहागिनों का महापर्व शुरू हो गया है। घर-घर में महिलाएं सौभाग्य प्राप्ति के लिए गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती का गुणगान शुरू हो गया है। बड़ी चौपड़ के लक्ष्मीनारायण बाईजी मंदिर में सुहागिनों का त्यौहार गणगौर पर्व परंपरागत उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। सुख-सौभाग्य, श्रेष्ठ वर की कामना के साथ कुंवारी लड़कियां, नव-विवाहिता और महिलाएं धुलंडी के दिन से होली की राख से सोलह गणगौर बनाकर पूजा कर रही हैं। मंदिर महंत पुरुषोत्तम भारती ने बताया कि जयपुर की स्थापना से पूर्व से ही गणगौर की पूजा होती है। गणगौर पूजन के लिए विभिन्न कॉलोनियों की महिलाएं यहां आ रही हैं। उल्लेखनीय है कि गणगौर पर परंपरागत गीतों के साथ ईसर और पार्वती का पूजन किया जाता है। आठवें दिन कुम्हार के घर से मिट्टी लाकर बड़ी गणगौर माता बनाई जाएगी। गणगौर के साथ ईसर, ब्रह्मा-ब्राह्मी, मालन-माली, पोल्या-पोली के स्वरूप भी बनाए जाएंगे।

विश्व रंगमंच दिवस पर नाट्यश्री सम्मान 27 को

सफल राजस्थान

जोधपुर। विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर राज्य की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक नगरी जोधपुर में 27 मार्च को रंगमंच के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली पांच विभूतियों को सम्मानित किया जाएगा। सीएसई के अध्यक्ष किशनगोपाल जोशी ने बताया कि कार्यक्रम में अभिनय गुरुकुल कल्चरल एज्युकेशनल सोसायटी व सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्युकेशन के संयुक्त तत्वावधान में सायं 5.30 बजे सिवांची गेट के बाहर गुरु शिवदत्त स्मारक गढ़ी स्थित स्वामी कृष्णानन्द स्मृति सभागार में आयोजित समारोह में रामचन्द्र शर्मा, उदयकिशन पुरोहित, रमेश भाटी नामदेव, प्रमोद वैष्णव तथा अनुराधा आडवानी को नाट्यश्री सम्मान 2019 प्रदान किया जाएगा। साथ ही राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पारंगत लेखक निर्देशक भानु भारती के मुख्य आतिथ्य में 'रंगमंच के कुछ सुलगते प्रश्न' विषय पर परिचर्चा का भी आयोजन किया जाएगा जिसमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक अरू व्यास और स्वाति व्यास प्रमुख वक्ता होंगे।

चौमूं में दो समुदायों के बीच आपसी विवाद के बाद पत्थरबाजी, दुकानें बंद, पुलिस बल तैनात

सफल राजस्थान

जयपुर। जिले के चौमूं कस्बे में रविवार को दो समुदायों के बीच आपसी विवाद के बाद पत्थरबाजी हो गई। इससे माहौल गरमा गया। घटना के बाद व्यापारियों ने कस्बे में दुकानें बंद कर दी। वहीं, सूचना मिलने पर एडिशनल डीसीपी बजरंग सिंह व एसीपी चौमूं फूलचंद मीणा, थानाप्रभारी हेमराज गुर्जर व अतिरिक्त जाब्ते के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। तब पुलिस ने झगड़े की स्थिति पर काबू पाया। दोनों समुदायों के लोगों को समझाईश कर दूर किया। फिलहाल तनाव बरकरार है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार चौमूं कस्बे में आगामी 5 अप्रेल को आयोजित होने वाली भगवा वाहन रैली और हिंदू समागम का कार्यक्रम आयोजित होने वाला है। इसके लिए हिंदू नववर्ष समारोह समिति के तत्वावधान में रविवार को गणेश निमंत्रण का कार्यक्रम रखा गया था। रविवार को पैदल रैली के रुप में समिति के कार्यकर्ता सुबह करीब 10.30 बजे से प्राचीन गढ़गणेश मंदिर में निमंत्रण देकर लक्ष्मीनाथ जी का चौक होकर आमलिया में गंगामाता मंदिर की तरफ जा रहे थे। यह रैली रास्ते में पठानों के मोहल्ले के पास पहुंची।

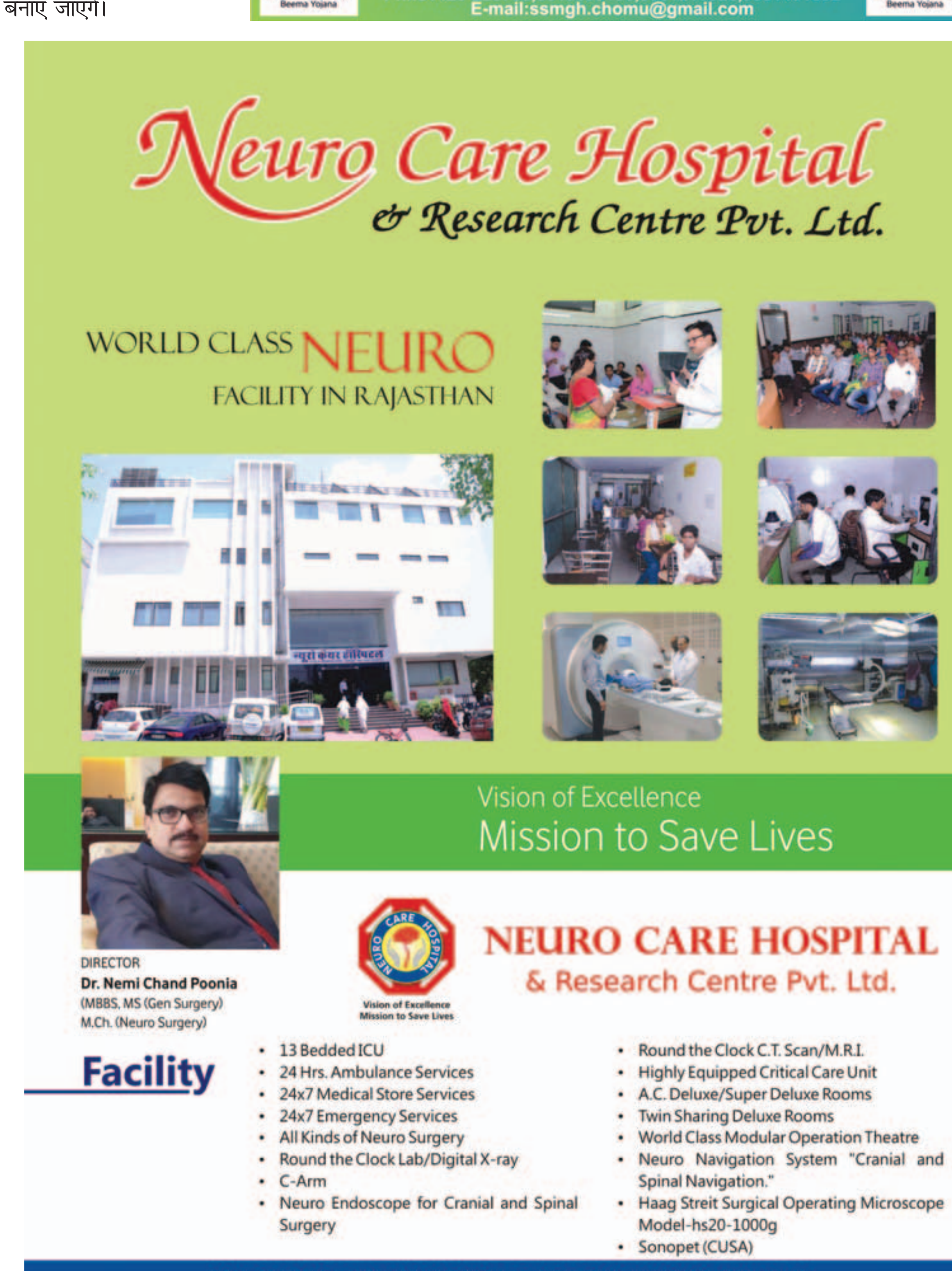

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक विमला देवी के लिए पी.के. प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, 31 पटेल नगर, 22 गोदाम, राम मंदिर जयपुर, जयपुर में मुद्रित एवं जी-48, सिने स्टार (सिटी स्टार), सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर -302039 से प्रकाशित।
सम्पादक : विमला देवी, E-Mail : safalraj2012@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर। मो. 8829966661, 9251166661, 9214466661